धनतेरस, धन्वन्तरी तथा दीवाली पूजा की कथा व वैज्ञानिक पहलू

डा0 भरत राज सिंह

धार्मिक और ऐतिहासिक दृष्टि से भी इस दिन का विशेष महत्त्व है। शास्त्रों में वर्णन है कि धनतेरस दीपावली त्यौहार आने की पूर्व सूचना देता है। भारत वर्ष में सर्वाधिक धूमधाम से मनाए जाने वाले त्योहार दीपावली का प्रारंभ धनतेरस से हो जाता है। इसी दिन से घरों की लिपाई-पुताई प्रारम्भ कर देते हैं। दीपावली के लिए विविध वस्तुओं की ख़रीद आज की जाती है। इस दिन से कोई किसी को अपनी वस्तु उधार नहीं देता। इसके उपलक्ष्य में बाज़ारों से नए बर्तन, वस्त्र, दीपावली पूजन हेतु लक्ष्मी-गणेश, खिलौने, खील-बताशे तथा सोने-चांदी के जेवर आदि भी ख़रीदे जाते हैं।

धनतेरस व धन्वन्तरी तथा दीवाली पर्व का महत्व

प्रचलित कथा के अनुसार एक समय भगवान विष्णु मृत्युलोक में विचरण करने के लिए आ रहे थे, लक्ष्मी जी ने भी साथ चलने का आग्रह किया। एक स्थान पर भगवान विष्णु लक्ष्मी से बोले 'जब तक मैं न आऊं, तुम यहाँ ठहरो। मैं दक्षिण दिशा की ओर जा रहा हूं। परन्तु लक्ष्मी जी से रहा न गया, पीछे-पीछे चल पड़ीं। कुछ ही दूर पर सरसों का खेत दिखाई दियाए उससे वह मुग्ध हो गईं और उसके फूल तोड़कर अपना श्रृंगार किया और आगे चलीं। आगे गन्ने (ईख) का खेत खड़ा था। लक्ष्मी जी ने चार गन्ने लिए और रस चूसने लगीं। चोरी के अपराध में तुम उस किसान की 12 वर्ष तक इस अपराध की सज़ा के रूप में सेवा करो। ऐसा कहकर भगवान उन्हें छोड़कर क्षीरसागर चले गए। लक्ष्मी किसान के घर रहने लगीं। 12 वर्ष बाद वारुणी पर्व के दिन भगवन विष्णू लक्ष्मी जी को लेने आये और किसान को गंगा स्नान के लिए चार कौरियों के साथ भेज दिया किसान ने लक्ष्मी जी को वापस भेजने के लिए मना कर दिया द्य तब भगवान ने किसान से कहा इन्हें कौन जाने देता हैए परन्तु ये तो चंचला हैंए कहीं ठहरती ही नहींए इनको बड़े.बड़े नहीं रोक सके। इनको मेरा शाप थाए जो कि 12 वर्ष से तुम्हारी सेवा कर रही थीं। तब लक्ष्मीजी ने कहा हे किसान! तुम मुझे रोकना चाहते हो तो जो मैं कहूं जैसा करो। कल तेरस हैए मैं तुम्हारे लिए धनतेरस मनाऊंगी। तुम कल घर को लीप-पोतकर स्वच्छ करना। रात्रि में घी का दीपक जलाकर रखना और सांयकाल मेरा पूजन करना और एक तांबे के कलश में रुपया भरकर मेरे निमित्त रखना, मैं उस कलश में निवास करूंगी। मैं इस दिन की पूजा करने से वर्ष भर तुम्हारे घर से नहीं जाऊंगी। यह कहकर वे दीपकों के प्रकाश के साथ दसों दिशाओं में फैल गईं और भगवान देखते ही रह गए। अगले दिन किसान ने लक्ष्मीजी के कथानुसार पूजन किया। उसका घर धन-धान्य से पूर्ण हो गया। इसी भांति वह हर वर्ष तेरस के दिन लक्ष्मीजी की पूजा करने लगा।

यह भी पौराणिक कथा है कि कार्तिक कृष्णा त्रयोदशी के दिन समुद्र मंथन से आयुर्वेद के जनक भगवान धन्वंतरी? अमृत कलश लेकर प्रकट हुए थे। उन्होंने देवताओं को अमृतपान कराकर अमर कर दिया था। तभी से धन्वन्तरी पूजा की जाने लगी और स्वास्थ्य के लिए धनतेरस के दिन से आयुर्वेदिक चिकित्सा पद्धति के जन्मदाता धन्वन्तरि भगवान का वैद्य-हकीम और ब्राह्मण समाज द्वारा पूजन कर धन्वन्तरि जयन्ती मनाया जाता है।

वैज्ञानिक पक्ष

उपरोक्त कथा से यह स्पष्ट होता है कि त्रयोदसी अर्थात 13 संख्या का कोई विशेष महत्व है। कृष्ण-पक्ष की त्रोयोदास्मी को चन्द्र दर्शन नाम.मात्र ही रहता है। शरद पूर्णिमा के दिन पूर्ण.चन्द्र के द्वारा सूर्य की परावर्तित किरणों के गुणों का व्याख्यान अमृत वर्षा से की गयी है। अतः कृष्णा पक्ष के 13वे तिथि को परावर्तित किरणों की मात्रा बहुत कम होती है और अमृत.पान का एक पक्ष (15 दिनो का) करीब बीतने को आ गया है। ऐसे में शरद पूर्णिमा की खीर के 12 दिन के सेवन से स्वास्थ्य पूर्णतः ठीक हो जाता है इस लिए धन्वन्तरी औषधि के जनक की जयंती कृष्णा पक्ष की 13वी तिथि को मनाई जाती है। स्वस्थजनो के यंहा धनधान्य की बढ़ोत्तरी होने जाने से भगवन धन्वन्तरी जी की पूजा व अर्चना का प्रावधान प्रकाश.दीप जला कर व खुसिया मनाकर किया जाता है। यमराज की पूजा आकस्मिक निधन से बचने के लिए तथा अमावस्या के दिन पूर्ण प्रकाश पैदा करने हेतु मिटटी के दीपो को तेल की बत्तियो के साथ लगाकर जलाने से एक तरह अँधेरे से प्रकाश की तरफ बढ़ने तथा दूसरी तरफ कीट.पतंगों के नष्ट होने से शरीर स्वस्थ व निरोगी हो जाता है। घर में धनधान्य में बढोत्तरी हेतु लक्ष्मी माँ की पूजा अर्चना का प्राविधान शास्त्रों में इन्ही तर्कों के परिपेक्ष्य में किया गया प्रतीत होता है।

आइए इस हर्ष उल्लास के पर्व धनतेरस, धन्वन्तरी तथा महालक्ष्मी की पूजा-अर्चना के इस प्रकाश के त्यौहार दीवाली को पूरे परिवार के साथ खुशियों के साथ मनाये और समाज में भाई.चारा व एकता का सन्देश प्रेषित करे।

धनतेरस पूजन कैसे करें

अद्ध कुबेर पूजन विधि

- शुभ मुहूर्त में अपने व्यावसायिक प्रतिष्ठान में नई गादी बिछाएं अथवा पुरानी गादी को ही साफ कर पुनः स्थापित करें।
- पश्चात नवीन बसना बिछाएं।
- सायंकाल पश्चात तेरह दीपक प्रज्वलित कर तिजोरी में कुबेर का पूजन करते हैं।

बद्ध यमराज पूजन विधि

- इस दिन वैदिक देवता यमराज का पूजन किया जाता है। पूरे वर्ष में एक मात्र यही वह दिन है, जब मृत्यु के देवता यमराज की पूजा की जाती है। यह पूजा दिन में नहीं की जाती अपितु रात्रि होते समय यमराज के निमित्त एक दीपक जलाया जाता है।
- इस दिन यम के लिए आटे का दीपक बनाकर घर के मुख्य द्वार पर रखा जाता हैं इस दीप को जमदीवा अर्थात यमराज का दीपक कहा जाता है।
- रात को घर की स्त्रियां दीपक में तेल डालकर नई रूई की बत्ती बनाकरए चार बत्तियां जलाती हैं। दीपक की बत्ती दक्षिण दिशा की ओर रखनी चाहिए।
- जल, रोली, फूल, चावल, गुड़, नैवे आदि सहित दीपक जलाकर स्त्रियां यम का पूजन करती हैं। चूंकि यह दीपक मृत्यु के नियन्त्रक देव यमराज के निमित्त जलाया जाता है। अतः दीप जलाते समय पूर्ण श्रद्धा से उन्हें नमन तो करें हीए साथ ही यह भी प्रार्थना करें कि वे आपके परिवार पर दया दृष्टि बनाए रखें और किसी की अकाल मृत्यु न हो।

धन की देवता कुबेर मन्त्र जाप

श्रीं, ह्रीं श्रीं, ह्रीं श्रीं क्लीं वित्तेश्वराय: नम:

इस मन्त्र का जाप आप रोज की पूजा में सुबह शाम करेण् इस मन्त्र का जाप 108 बार करना चाहिए तथा जाप के दौरान कुबेर देव का ध्यान करेण् मन्त्र जाप के समाप्ति के पश्चात यदि हनुमान चालीसा का पाठ किया जाय तो यह अति उत्तम होता है।

सावधानियाँ

- सावधान और सजग रहें। असावधानी और लापरवाही से मनुष्य बहुत कुछ खो बैठता है। विजयादशमी और दीपावली के आगमन पर इस त्योहार का आनंदए खुशी और उत्साह बनाये रखने के लिए सावधानीपूर्वक रहें।
- पटाखों के साथ खिलवाड़ न करें। उचित दूरी से पटाखे चलाएँ।
- मिठाइयों और पकवानों की शुद्धताए पवित्रता का ध्यान रखें ।
- भारतीय संस्कृति के अनुसार आदर्शों व सादगी से मनायें। पाश्चात्य जगत का अंधानुकरण ना करें।
- पटाखे घर से दूर चलायें और आस.पास के लोगों की असुविधा के प्रति सजग रहें।
- स्वच्छ्ता और पर्यावरण का ध्यान रखें।
- पटाखों से बच्चों को उचित दूरी बनाये रखने और सावधानियों को प्रयोग करने का सहज ज्ञान दें।

दीवाली से पहले मेन गेट के पास रखें ये 6 चीजें, साल भर बरसेगी मां लक्ष्मी की कृपा

वास्तु शास्त्र के मुताबिक आपके घर-आंगन और दुकान के मुख्य द्वार पर इन 6 वस्तुओं लगाने से माता लक्ष्मी की कृपा बरसती है। परिवार में सुख-समृद्धि, अच्छी सेहत आती है।

भारत में दिवाली का त्यौहार सबसे बड़ा पर्व माना गया है। जो लोग इस पर्व के शास्त्रीय महत्व को समझते हैं वो उसका पालन भी करते हैं। वास्तु में घर-दुकान के मेन गेट का विशेष महत्व होता है। इसलिए दिवाली पर मां लक्ष्मी को खुश करने के लिए मेन गेट की साफ-सफाई से लेकर दरवाजे को सजाने का खास ध्यान रखा जाता है।

वास्तु टिप्स अपनाएं, और अच्छे से दिवाली मनाएं

सफलता और सम्पन्ना के पीछे किस्मत का बड़ा हाथ होता है और कौन नहीं चाहता अपनी किस्मत संवारना। वास्तुशास्त्र या वास्तुवेद, ऐसी परंपरागत प्रणाली है, जो वस्तुओं की दिशात्मक नियुक्ति के सिद्धांत पर निर्भर करती है। कुछ लोग दीपावली के दिन अपनी किस्मत आजमाते हैं, तो कुछ उसे संवारने का यथा संभव प्रयास करते हैं। आप यह तो जानते ही होंगे कि किस्मत लक्ष्मी के नाम से मशहूर है। दिवाली के दिन धन की देवी लक्ष्मी को प्रसन्न करने के लिए आप अपने घर व ऑफिस्र दोनों ही स्थान पर वास्तु के अनुसार पूजन कर सकते हैं। वास्तु से आपके घर में सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है।

वास्तु टिप्स :

फेंकने योग्य सामान :

ऐसी किताबो, अखबारों, खिलौनों व बर्तनों को दान कर देंए जो आपकी जरूरत के नहीं हैं। ऐसा करके आप पुण्य के भागी तो बनेंगे हीए नकारात्मक ऊर्जा से भी बच सकेंगे। अगर आप घर रंगवा सकते हैं, तो यह और भी अच्छा है।

रंगोली:

देवी लक्ष्मी को प्रसन्न करने के लिए घर के प्रवेश द्वार पर रंगोली बनायें, इसके लिए आप चावल, बालू या रंगीन पाउडर का प्रयोग कर सकते हैं।

सौंदर्यीकरण :

मुख्य द्वार को फूलों या पत्तियों से सजायें, दरवाजों पर रंगीन पर्दे लगायें और लक्ष्मी का स्वागत करें।

दीये:

घर की चाहरदीवारी पर चार दीयों को एक साथ रखें क्योंकि चार दीयों का अर्थ है लक्ष्मीए गणेशए कुबेर और इंद्र।

पूजा :

देश के उत्तरी भाग में दीपावली के दिन लक्ष्मी पूजा जरूरी मानी जाती है। पूजा के लिए घर में अच्छी खुशबू वाली अगरबत्ती जलायें और भगवान गणेश और लक्ष्मी का पूजन करें।

दीपावली के उपहार :

मिठाइयां बाटें, लेकिन पटाखे ना बांटें। उपहार में चाकू या चमड़े के सामान ना दें। काले कपड़े ना भेंट करें।

दिवाली पर सेफ रहने के लिए आजमाएं ये तरीके

दीपावली दीपों का त्यौहार है, इस दिन रोशनी का विशेष महत्व होता है। दीपावली का त्यौहार अपने साथ खुशियां लेकर आता है और इस त्यौहार को हम पूरी पवित्रता और हर्षोल्लास के साथ मनाते हैं। इस रोशनी के त्यौहार को बड़े पैमाने पर मनाया जाता है लेकिन लापरवाह रहने से इस पर्व का मजा किरकिरा हो सकता है। इसलिए इस समय कुछ बातों का ध्यान रखना बहुत जरूरी होता है। आइए हम आपको बताते है सेहतमंद और सुरक्षित दीपावली मनाने के कुछ उपायों के बारें में।

इस दीपावली क्या करें

- पटाखे जलाते समय पैरों में चप्पल या जूते जरूर पहनें।
- पटाखे हमेशा खुले स्थान पर जलायें, कभी भी घर के अंदर या बंद स्थान पर पटाखे ना जलायें। साथ ही आसपास देख लें कि कोई आग फैलाने वाली या फौरान आग पकड़ने वाली चीज तो नहीं है।
- पटाखे जलाते समय आसपास में पानी रखें और घर में जल जाने पर लगायी जाने वाली दवाएं भी रखें।
- अपने चेहरे को पटाखे जलाते समय दूर रखें।
- पटाखें को शीघ्र जलने वाले पदार्थों से दूर रखें।
- जल जाने पर पानी के छीटें मारें।
- हमेशा लाइसेंसधारी और विश्वसनीय दुकानों से ही पटाखे खरीदें।

क्या ना करें

- पटाखे कभी भी हाथ में न जलायें क्योंकि ऐसा करने से पटाखों के हाथ में फटने की अधिक संभावना रहती है।
- विस्फोटक कभी भी हाथों में ना रखें।
- पटाखों को दीये या मोमबत्ती के आसपास ना जलायें।
- जब आपके आसपास कोई पटाखे जला रहा होए तो उस समय पटाखों का प्रयोग ना करें।
- बिजली के तारों के आसपास पटाखे ना जलायें।
- अगर किसी पटाखे को जलने में बहुत अधिक समय लग रहा हैए तो उसे दोबारा ना जलायें, बल्कि किसी सुरक्षित स्थान पर फेंक दें।
- आधे जले हुए पटाखों को इधर-उधर ना फेकें।
- रॉकेट जैसे पटाखे ऐसे समय में बिल्कुल न जलाएंए जब ऊपर किसी तरह की रुकावट जैसे पेड़, बिजली के तार आदि हो।

वास्तु के अनुसारए घर-दुकान के मेन गेट के पास ये 6 चीजें रेखने से देवी लक्ष्मी विशेष कृपा होती है और घर-परिवार को पैसों से लेकर अच्छी सेहत तक सब कुछ मिलता हैं।

मेन गेट पर फूलों से भरा बर्तन रखें

धनतेरस या दीवाली पर घर या दुकान के मेन गेट के पास किसी बर्तन में पानी भरकर उसमें फूल डाल दें। पानी और फूल से भरे इस बर्तन को गेट के पूर्व या उत्तर दिशा में रखें। ऐसा करने से घर के मुखिया को कई फायदे होंगे।

मेन गेटपर बने हो लक्ष्मीजी के पदचिह्न

धनतेरस या दीवाली पर घर के मेन गेट पर मां लक्ष्मी के पैर का चिन्ह लगाना बेहद शुभ होता है। ध्यान रखें कि पैर की दिशा अंदर की तरफ ही रहे यानि जैसे मां लक्ष्मी घर में प्रवेश कर रही हों। इससे घर में धन की कमी नहीं होती।

तोरण सजाने से आती है पॉजीटिव एनर्जी

दीवाली से पहले घर के दरवाजे पर सुंदर तोरण बांधना चाहिए। बाजार में मिलने वाले तोरण की जगह अगर तोरण आम की पत्तीए पीपल या अशोक के पत्तों से खुद घर पर बनाया गया है तो और भी अच्छा होगा। इन सभी चीजों से बने तोरण से घर में नकारात्मक ऊर्जा नहीं आती।

मेन गेट पर लगाए कमल पर बैठी मां लक्ष्मी की तस्वीर

दीवाली पर घर या दुकान के मेन गेट के ऊपर मां लक्ष्मी की ऐसी तस्वीर लगाएंए जिसमें मां कमल के फूल पर विराजित हों। ऐसा करने से घर-परिवार को कई शुभ फल मिलते हैं।

मेन गेटपर बनाएं स्वास्तिक

घर या दुकान के दरवाजे पर चांदी का स्वास्तिक लगाना शुभ फलदायक माना जाता है। वास्तु के अनुसार, इससे घर में बीमारी नहीं आती। यदि आप चांदी का स्वास्तिक नहीं बनवा सकते तो लाल कुमकुम से भी स्वास्तिक बना सकते हैं। दोनों का प्रभाव बराबर होता है। चांदी का बना स्वास्तिक ज्यादा समय तक टिकाऊ होता है जबकि कुमकुम के स्वास्तिक को आपको कुछ समय बाद फिर से सुधारना होगा।

मेन गेट पर लिखना चाहिए शुभ-लाभ

घर या दुकान के मेन गेट पर ओम का चिन्ह बनाएं या शुभ-लाभ लिखें। आपने कई जगह दुकान या माकानों में बना देखा भी होगा। ध्यान रखें ये चिन्ह दरवाजे के पूर्व या उत्तर दिशा की ओर ही बनाएं। ऐसा करने से घर में कोई बीमारी ज्यादा समय तक नहीं रहती है।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक **राजेश श्रीवास्तव** के द्वारा **इंडियन एक्सप्रेस लि. प्रेस**, सी-26, अमौसी इंडस्ट्रियल एरिया, लखनऊ से मुद्रित तथा ई-126 जियामऊ, हजरतगंज- लखनऊ से प्रकाशित।
दिल्ली कार्यालय : सी-40, साऊथ एक्सटेंशन, पार्ट-II, नयी दिल्ली-49, **फोन-** 011-41320470, **संपादक** - राजेश श्रीवास्तव, **सलाहकार संपादक :** सरिता श्रीवास्तव **फोन-**0522-2204499